* श्री गणेशाय नमः *

श्रीराम प्रेस पुस्तकमाला का प्रथम पुष्प

दोहा मणिमाल

किया जारहा आजकल जो साहित्य प्रचार ।
दुख्य हेत अति अल्प भी जो करसके सुधार ॥



चुनो हुई लेखकों की इस प्रकार की खानि ।
तभी उच्च साहित्यका होय न उचित सम्मान ॥

चुना हुआ वागीश का स्वाभाविक कविराज ।
[illegible] रहित करता रहे शुभ समाज का काज ॥

लेखक और प्रकाशक

[illegible]न चतुर्वेदी, औरैया (इटावा)

प्रथमवार] सम्वत् २०१२ वि० [मूल्य ≡)